अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

वर्ष: 3, अंक: 11

मार्च 2026

अनेकांत आधारित व्रती समाज

वर्ष : 3 अंक : 11

मार्च 2026

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

संयोजक समाचार
पंकज दुधोड़िया

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

वर्तमान युग में अणुव्रत के सिद्धांतों की विशेष उपादेयता है। अणुव्रत के नियमों के प्रति निष्ठा सामाजिक समानता एवं राष्ट्रीय शांति स्थापना में सहायक है। इन नियमों में निहित सहनशीलता, इच्छाओं का अल्पीकरण, आत्मसंयम तथा सभी प्राणियों के प्रति दया की भावना के कारण समाज में आर्थिक शोषण पर रोक लगती है। इन सिद्धांतों को जो व्यक्ति सही मायने में जीवन में उतारता है, वह एक अच्छा इंसान बन जाता है।

- आर.एम. लोढा,
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय

अध्यक्ष : **प्रतापसिंह दुगड़**
महामंत्री : **मनोज सिंघवी**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

महावीर को श्रेष्ठ श्रद्धाप्रणति

इंसान अपने जीवन को बेहतर तरीके से कैसे जीये, यह जिज्ञासा उसे आदि काल से प्रेरित करती रही है। व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर वह इस दिशा में निरंतर प्रयास करता रहा है। जब-जब ये प्रयास अपनी दिशा से भटके हैं, तब-तब महान दार्शनिकों ने जीवन के दर्शन को बहुत ही सरल और आम समझ की भाषा में व्याख्यायित किया है।

आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व का समय दुनियाभर में दार्शनिक, आध्यात्मिक और धार्मिक दृष्टि से आलोड़न का समय रहा। तब लोक व्यवहार में स्थापित हो चुकी रूढ़ परंपराओं को चुनौती दी जा रही थी। भारतीय उपमहाद्वीप की दृष्टि से देखें तो महावीर इस बदलाव के एक शिखर पुरुष थे। उन्होंने धर्म के नाम पर प्रचलित रूढ़ परंपराओं को न सिर्फ चुनौती दी वरन् अपने जीवन को उदाहरण बना, सत्य धर्म से जन-जन को परिचित कराया। महावीर द्वारा प्रवर्तित अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह और आत्मानुशासन के सिद्धांत श्रेष्ठ मानव से श्रेष्ठ विश्व निर्माण की बुनियाद रखते हैं।

महावीर के जीवन-दर्शन में संयम को महत्वपूर्ण स्थान मिला है। आधुनिक युग में आचार्य तुलसी ने महावीर के इस महान अवदान को 'अणुव्रत' के रूप में प्रस्तुत कर जीवन मूल्यों के प्रति जनमानस में एक ऐसी आस्था का निर्माण किया जिसने लाखों-लाखों लोगों के जीवन को सद्प्रभावित किया है। आवश्यकता है कि संयम रूपी इस मूलभूत मूल्य को जनजीवन का अभिन्न अंग बनने के लिए मुक्त आकाश मिले। महावीर जयंती पर यही हमारी श्रेष्ठ श्रद्धाप्रणति होगी।

- संचय जैन
sanchay_avb@yahoo.com

अनेकांत आधारित व्रती समाज

■ आचार्य महाप्रज्ञ

महावीर ने एक समाज की कल्पना की थी। उसका नाम हो सकता है व्रती समाज। व्रती समाज की जो परिकल्पना है, उस पर दर्शन की दृष्टि से विचार करें। वह न भौतिकवाद है और न कोई दूसरा अन्य वाद। वह एक समन्वित वाद है, जिसमें भौतिकवाद और अध्यात्मवाद - दोनों का समन्वय है। महावीर यथार्थवादी थे। उन्होंने भौतिकवाद को, पौद्गलिक सुख को अस्वीकार नहीं किया। किन्तु उनमें प्रकृति का भेद अवश्य बतलाया - एक शाश्वत सुख या आन्तरिक सुख है, दूसरा क्षणिक अथवा भौतिक सुख है।

महावीर ने कहा - 'खणमेत्त सोक्खा बहुकाल दुक्खा' - भौतिक सुख क्षणिक होता है, परिणाम में दु:खद होता है। इस अन्तर का प्रतिपादन किया पर यह नहीं कहा - जो भौतिकवाद है या भौतिकवादी दृष्टिकोण है, वह सर्वथा गलत है।

ज्वलन्त प्रश्न भ्रष्टाचार का

आधुनिक अर्थशास्त्र भौतिकवाद के आधार पर विकसित हुआ है। उसकी कठिनाई यह एकांगी दृष्टिकोण ही है। यह एकांगी दृष्टिकोण नहीं होता तो वर्तमान में इतनी आर्थिक अपराध की स्थितियां नहीं बनतीं, इतनी आर्थिक स्पर्धा नहीं होती, उत्पादन और वितरण में इतनी विषमता पैदा नहीं होती। आधुनिक अर्थशास्त्र के प्रमुख पुरुष केनिज कहते हैं- ''हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है, सबको धनी बनाना है। इस रास्ते में नैतिक विचारों का हमारे लिए कोई मूल्य नहीं है।''

आज ज्वलन्त प्रश्न है भ्रष्टाचार का। बहुत सारे लोग भ्रष्टाचार की बात करते हैं, कहते हैं - आज भ्रष्टाचार बढ़ा है। जब

विलासिता न हमारी आवश्यकता है, न अनिवार्यता। न सुविधा है, न कोरा मनोरंजन। वह केवल भोगवृत्ति का उच्छृंखल रूप है।

अर्थशास्त्र की मूल धारणा यह है कि नैतिकता का विचार हमारे मार्ग में बाधक है तो फिर भ्रष्टाचार का रोना क्यों? इसमें आश्चर्य किस बात का है? वर्तमान की अर्थशास्त्रीय अवधारणा के बीच यदि भ्रष्टाचार बढ़ता है, आर्थिक अपराध बढ़ते हैं, अप्रामाणिकता और बेईमानी बढ़ती है तो स्वाभाविक है। भ्रष्टाचार न बढ़े तो आश्चर्य की बात है।

आधुनिक अर्थशास्त्र के आधार

इस समग्र पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में वर्तमान के अर्थशास्त्र और भगवान महावीर के युग के अर्थशास्त्र के कुछ कोणों पर विचार करें। आधुनिक अर्थशास्त्र के तीन मुख्य आधार हैं – इच्छा, आवश्यकता और माँग। इच्छा को बढ़ाओ, आवश्यकता को बढ़ाओ और माँग को बढ़ाओ। तुलनात्मक दृष्टि से देखें – इच्छा का क्षेत्र व्यापक है। आवश्यकता का क्षेत्र उससे छोटा है और माँग का क्षेत्र उससे भी छोटा है। इन तीन पर आधुनिक अर्थशास्त्र का ढाँचा खड़ा है।

महावीर का अर्थशास्त्र

महावीर के अर्थशास्त्र के तत्त्वों पर विचार करें तो आधुनिक अर्थशास्त्र में चार बातें और जोड़ देनी चाहिए – सुविधा, आसक्ति, विलासिता एवं प्रतिष्ठा।

अनियंत्रित इच्छा

आधुनिक अर्थशास्त्र का सूत्र है – अनियंत्रित इच्छा ही हमारे लिए कल्याणकारी और विकास का हेतु है। जहाँ इच्छा का नियंत्रण करेंगे, विकास अवरुद्ध हो जाएगा। जहाँ अनियंत्रित इच्छा है, वहाँ मनुष्य निश्चित रूप से परिधि में चला जाएगा और अर्थ केन्द्र में आ जाएगा।

असीम आवश्यकता

आवश्यकता के लिए भी यही सूत्र काम करता है। अर्थशास्त्र का सूत्र है – आवश्यकता को असीम विस्तार दो, कहीं रोको मत। इससे भी मनुष्य किनारे पर लग जाता है और अर्थ केन्द्र में आ जाता है।

सुविधा का अतिरेक

हम सुविधा को अस्वीकार नहीं कर सकते। महावीर ने भी इसे सर्वथा अस्वीकार नहीं किया। इसलिए कि मनुष्य के भीतर कामना है। कामना है तो फिर सुविधा उसके लिए अनिवार्य बन जाती है। कामना और सुविधा – इन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। यथार्थवादी दृष्टिकोण यही है – जहाँ कामना है, वहाँ सुविधा अनिवार्य होगी। महावीर ने भी इस यथार्थ को स्वीकार किया – सुविधा की अपेक्षा है, किन्तु जहाँ सुविधा का अतिरेक हो जाता है, वहाँ मनुष्य गौण बन जाता है और अर्थ प्रधान बन जाता है।

विलासिता

विलासिता न हमारी आवश्यकता है, न अनिवार्यता। न सुविधा है, न कोरा मनोरंजन। वह केवल भोगवृत्ति का उच्छृंखल रूप है। समझदार मनुष्य उसमें किसी भी सार्थक तत्त्व को नहीं देख पाता। वहाँ केवल अर्थ की लोलुपता और उसकी पूर्ति के साधन के सिवा और कुछ नहीं बचता।

महावीर का सूत्र

इन सूत्रों के आधार पर अर्थनीति का निर्धारण होता है और आदमी अर्थार्जन की वृत्ति में संलग्न होता है। प्रश्न है – महावीर ने इस विषय में क्या नया सूत्र दिया? क्या इच्छा को अस्वीकार किया? नहीं। उन्होंने स्वयं कहा – इच्छा हु आगाससमा अणंतया – इच्छा आकाश के समान अनन्त है। क्या आवश्यकता को रोकने की बात कही? उन्होंने यह भी नहीं कहा – आवश्यकताओं को समाप्त कर दो, उनका प्रयोग मत करो। उन्होंने इनके साथ संयम शब्द का प्रयोग किया – इच्छा का संयम करो, आवश्यकता का संयम या सीमाकरण करो।

छाया भी एक सत्य है

कल्पना मनोरमा, दिल्ली

हम बचपन से एक कहावत सुनते आये हैं - 'दीपक तले अंधेरा।' ज्यादातर इसका मतलब यही समझाया गया कि कोई कितना ही बड़ा या महान क्यों न हो, उसकी कुछ कमियाँ उसके साथ हमेशा चलती ही हैं। जीवन की छोटी-बड़ी विडंबनाओं को समझाने के लिए बड़े-बुजुर्ग इस कहावत का इस्तेमाल करते रहे हैं। उनका कहना यही रहा कि जो स्वयं प्रकाश देता है, उसके ठीक नीचे अंधेरा रह ही जाता है। या क्यों रहता है? धीरे-धीरे यह बात हमारे सोचने का हिस्सा बन गयी।

कभी-कभी मन में यह सवाल भी उठता है - क्या सच में दीपक के तले अंधेरा होता है या यह बस हमारी देखने की आदत का प्रतिफल है? यदि दीपक पूरे कमरे को आलोकित कर रहा है, तो यह मान लेना सहज है कि वह स्वयं भी उसी प्रकाश में होगा। पर क्या वास्तव में ऐसा है? क्या दीपक अपने नीचे किसी अंधकार को पाल रहा है, या हम उसे वैसा मान लेते हैं क्योंकि हमारी दृष्टि उसके आगे नहीं पहुँच पाती?

वस्तुत: दीपक का उद्देश्य स्वयं को प्रकाशित करना नहीं, बल्कि आसपास को प्रकाश देना होता है। वह जिस उजाले को औरों तक पहुँचाता है, उसी में अपनी सार्थकता देखता है। इसलिए उसके नीचे जो क्षेत्र प्रकाश से अछूता प्रतीत होता है, वह किसी अभाव का नहीं, बल्कि उसके कार्य-स्वभाव का परिणाम है।

यहीं से दीपक के पुरुषार्थ की समझ बनती है। उसका पुरुषार्थ नि:स्वार्थ है, ऐसा पुरुषार्थ जो प्रतिफल की अपेक्षा नहीं करता। वह अपने अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए स्वयं पर रोशनी डालने की कोशिश नहीं करता। उसका कर्म ही उसका परिचय है।

यदि हम ध्यान से देखें, तो दीपक के नीचे जो अंधकार प्रतीत होता है, वह वास्तव में अंधकार नहीं, उसकी अपनी छाया होती है। छाया जो हर वस्तु की होती है, हर जीव की होती है। छाया का होना अस्तित्व का नियम है। यह प्रकृति का विधान है जहाँ प्रकाश होगा, वहाँ छाया भी जन्म लेगी।

छाया को केवल 'अंधेरा' कह देना एक सांस्कृतिक सरलीकरण है, जबकि छाया जीवन का प्रमाण है, जीवंतता का संकेत है। वह बताती है कि कुछ है, जो प्रकाश को थामे खड़ा है।

दीपक की लौ अकेले नहीं जलती। उसमें वस्तुओं, हाथों और श्रम की एक पूरी शृंखला जुड़ी होती है। जब वह एक कमरे को रोशन करता है, तो वस्तुत: वह सामूहिकता के उल्लास को जी रहा होता है। वह अकेले खड़ा दिखता है, पर अकेला नहीं होता।

यदि दीपक को मनुष्य के रूप में देखें, तो वह द्रष्टा है, दाता है, साधक है। उसकी लौ की दिशा सदा ऊर्ध्वगामी होती है। उसका स्वभाव अग्रगामी है, लक्ष्यपूर्ण है। दूसरों के जीवन में प्रकाश भरना ही उसका धर्म है। पर प्रश्न यहीं आकर फिर खड़ा हो जाता है – क्या यह न्याय है कि दूसरों को उजाला देने वाला स्वयं छाया में रहे? और यदि ऐसा है, तो क्या यह उसकी विवशता है या उसका चुनाव? इस प्रश्न पर यदि विचार किया जाये तो स्पष्ट होता है कि दीपक अपने नीचे छाया चुनता नहीं है। वह केवल अपने उद्देश्य पर केंद्रित रहता है। छाया उसकी उपेक्षा नहीं, उसका आत्मविसर्जन है।

वह जानता है कि जिस क्षेत्र को वह रोशन नहीं कर पा रहा, वहाँ भी वह अनुपस्थित नहीं है। वह वहाँ अपनी ही छाया के रूप में मौजूद है। यही बात मनुष्य के जीवन में भी गहराई से

लागू होती है। जो लोग दूसरों के जीवन को रोशन करते हैं शिक्षक, माता-पिता, समाज-सुधारक, कलाकार, लेखक, कार्यकर्ता वे अक्सर अपनी ही छाया में गुम रहते हैं। समाज उनके उजाले का उपभोग करता है, पर उनकी छाया में उतरने का धैर्य बहुत कम लोगों में होता है।

आज के समय में, जब हर व्यक्ति पहले स्वयं को प्रकाशित करने की होड़ में लगा है, पहले दिखने की, पहले चमकने की। तब दीपक का यह मौन दर्शन और भी प्रासंगिक हो जाता है। जो सच में प्रकाशवान होता है, उसे अपनी छाया से घबराने की आवश्यकता नहीं होती। छाया उसका बोझ नहीं होती। वह उसका सत्य होती है। उसके होने की निशानी।

इसलिए अगली बार जब हम कहें 'दीपक तले अंधेरा' तो उस अंधेरे को केवल उपेक्षा या विडंबना के रूप में न देखें। उस छाया में छिपे दीपक के परिश्रम, त्याग और मौन संतुलन को समझने का प्रयास करें क्योंकि वह अंधकार नहीं, प्रकाश की छाया है। ...और छाया भी एक सत्य है। दीपक की छाया उसकी मौन साधना का हिस्सा है। उसकी पूर्णता स्वयं दीप्त होने में नहीं, बल्कि जलते हुए भी संतुलित रहने में है।

हमसे जुड़ने के लिए
नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें

क्यों इतना डरते हो?

■ डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', जयपुर ■

आखिर क्यों इतना डरते हो?
सोच रहे हो कल क्या होगा
जीवन तो आधा ही भोगा
मृत्यु सिरहाने खड़ी हो गयी
जाने अंत कहाँ कब होगा?

क्यों भयभीत तुम्हारा मन है
सोच रहे अक्षय यह तन है!
दिव: स्वप्न में ऊंघ रहे हो
मोह भरा कैसा जीवन है!
नहीं जानते तन ही मरता
तुम कब भला मरा करते हो!
आखिर क्यों इतना डरते हो?

जो जन्मा है ध्रुवं मरेगा
अगर मरा है ध्रुवं जीएगा
यह निसर्ग का नियम सनातन
कोई भी क्या यहाँ करेगा?
कोई जग में है कब मरता!
केवल अपने वस्त्र बदलता
जीवन मरण मात्र परिवर्तन
शाश्वत रहती यहाँ अमरता
जीर्ण पुरातन वस्त्र फेंक कर
नूतन वस्त्र धरा करते हो।
आखिर क्यों इतना डरते हो?

बुजुर्ग का सम्मान

गोविन्द भारद्वाज, अजमेर

''लो बाबा तुम्हारे सौ रुपये।'' घर के लॉन में पेड़-पौधों की कटाई-छँटाई करवाने के बाद लता ने उस गरीब बुजुर्ग से कहा।

नोट को हाथ में लेते ही वृद्ध ने कहा,''बिटिया, यह नोट तो फटा-पुराना है...दूसरा दे दो। इसे कोई दुकान वाला नहीं लेगा...फिर मैं घर का सामान कैसे खरीदकर ले जाऊँगा?''

''तो मेरे पास कौन-से पेड़ पर रुपये लटक रहे हैं...।'' लता ने चिल्ला कर कहा। उसकी आवाज सुनकर रमेश बाहर आया और पूछा, ''क्यों चिल्लम-चिल्ली मचा रखी है?''

''देखिए जी...ये बूढ़ा सौ रुपये लेने से मना कर रहा है...कह रहा है कि नोट फटा-पुराना है।'' लता ने कहा।

रमेश ने उस वृद्धजन से नोट लेते हुए कहा,''लो बाबा, आप दूसरा नोट ले जाओ।''

वृद्ध ने चुपचाप नोट ले लिया। लता ने गुस्से में कहा,''तुम अंधे थे क्या जो इस नोट को किसी से ले आये...जैसे-तैसे आज इसे चलाने की कोशिश कर रही थी...उसमें भी तुमने अपनी टाँग अड़ा दी।''

रमेश ने पलट कर कहा,''लाया तो देखकर ही था, मगर देने वाले की स्थिति और स्नेह देखकर मैं मना नहीं कर सका, वैसे भी बुजुर्ग का सम्मान जरूरी था।''

''कौन था वो बुजुर्ग जिसको फटा नोट देते हुए शर्म भी नहीं आयी?'' लता ने घूरती हुई निगाहों से पूछा।

रमेश ने धीरे से जवाब दिया,''तुम्हारे वृद्ध पिताजी!'' लता की नजरें झुक गयीं।

महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन

नमिता वैश्य, गोण्डा

महात्मा गांधी का मूल मंत्र था - शोषण विहीन समाज की स्थापना और इसके लिए सभी का शिक्षित होना। स्वतंत्र व्यक्तित्व निर्माण के साथ ही वे आत्मनिर्भर व्यक्तित्व की प्राप्ति कराना भी शिक्षा का कार्य मानते थे। इसके लिए शिक्षा को श्रम से जोड़ने की जोरदार वकालत करते थे। गांधीजी के अनुसार व्यक्ति का आर्थिक स्वावलंबन भी शिक्षा का आवश्यक प्रयोजन है। व्यक्तित्व का चहुंमुखी विकास अन्ततः शिक्षा की मूल भावना है। यही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है। यही महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन का सार भी है।

गांधीजी के अनुसार, प्राथमिक से माध्यमिक, स्नातक, परास्नातक अथवा पाठशाला से विश्वविद्यालय तक में निर्धारित पाठ्यक्रमों व विषयों के अनुसार शिक्षकों और आचार्यों की देखरेख व निर्देशन में ज्ञानार्जन, प्रशिक्षण-प्राप्ति और शोध कार्य शिक्षा-प्रक्रिया का पहला भाग है। इसे सामान्य ज्ञानार्जन कह सकते हैं। क्रीड़ा, व्यायाम, योग और आवश्यक रूप से शरीर-श्रम, जिसका उद्देश्य काया को स्वस्थ रखना है, शरीर के समस्त अंगों को सक्रिय एवं सकारात्मक सोच में संलग्न रखना है, शिक्षा-प्रक्रिया का दूसरा भाग है। इसे शारीरिक शिक्षा कहेंगे।

जीवन को विकसित एवं समृद्ध करने के उद्देश्य से नैतिकता तथा सदाचार की शिक्षा इस क्रम में तीसरा पक्ष है। शिक्षा-प्रक्रिया का यह भाग यदि दुर्बल रहता है, तो शिक्षा अपने उद्देश्य को कदापि प्राप्त नहीं कर सकती।

शिक्षा-प्रक्रिया का चौथा पक्ष सामान्यतः तकनीकी शिक्षा है। गांधीजी का बुनियादी शिक्षा का विचार इसके केंद्र में है।

इसकी मूल भावना प्रारंभ से ही शिक्षार्थी को स्वावलंबन की ओर आगे बढ़ाना है। उसकी आर्थिक समृद्धि के द्वार खोलना है। ऐसी शिक्षा जिसमें बच्चे अपने माता-पिता से दूर होते चले जाएं तथा अपने पैतृक व्यवसाय को भूल जाएं, को गांधीजी शिक्षा नहीं अपितु अशिक्षा ही मानते थे। गांधीजी हस्तकला को शिक्षा का केंद्र बनाने के पक्षधर थे। उनकी शिक्षा का उद्देश्य लोगों को सर्वोदय की ओर ले जाना था।

आर्थिक पराधीनता से मुक्ति के लिए गांधीजी ने स्वदेशी आंदोलन का प्रसार किया। मगर अफसोस, हम आजादी के इतने वर्षों बाद भी अपनी शिक्षा प्रणाली में उस सृजनशीलता का विकास नहीं कर पाये, जो रोजगार में सहायक बनती और शिक्षित युवकों को आत्मनिर्भर बनाती।

गांधीजी ने तत्कालीन भारत की परिस्थितियों को देखकर माना था कि अगर शिक्षा को अनिवार्य या सभी लड़के-लड़कियों के लिए सुलभ बनाना हो तो स्कूल-कॉलेजों को प्राय: स्वावलंबी होना होगा। वे यंग इंडिया में लिखते हैं, ''हम गरीब विद्यार्थियों को फीस की माफी आदि की सुविधा दें, उससे क्या यह ज्यादा अच्छा नहीं होगा कि हम उन्हें ऐसा कोई काम दें जिसे करके वे अपना खर्च खुद निकाल लें?'' गांधीजी की स्पष्ट मान्यता थी कि सैद्धांतिक ज्ञान का व्यावहारिक ज्ञान से प्रत्यक्ष संबंध हो। स्नातक विद्यार्थी अपने पैरों पर खड़ा हो सके, ऐसी शिक्षा होनी चाहिए।

यह विडंबना है कि शिक्षा के वास्तविक अर्थ व उद्देश्य को प्रकट करती, तदनुसार कार्य की अपेक्षा करने वाली गांधी-विचार की शिक्षा-योजना शिक्षाविदों के लिए प्रमुख मार्गदर्शक नहीं बनी। आज इसके समुचित विश्लेषण तथा तदनुसार कार्य करने की नितांत आवश्यकता है।

गांधीजी की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा तथा शिक्षा दर्शन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक है। यह केवल मानसिक विकास की ओर ही ध्यान नहीं देती, बल्कि शारीरिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए भी उपयोगी है।

घर आया वसंत

पूजा गुप्ता, मिर्जापुर

मेरा सबसे छोटा बेटा और बहू अपने काम-धंधे के सिलसिले में हमारा गाँव वाला फार्म छोड़कर शहर चले गये थे। मेरे पति भी शहर में ही काम करते थे। अकेली होने के कारण अक्सर मैं देर से बिस्तर छोड़ती। एक सुबह जब मैं अपने पुराने फार्म हाउस के पास पहुँची तो देखती क्या हूँ कि एक खिड़की टूटी है और सामने का दरवाजा भी खुला पड़ा है। मेरा बेटा जो साइकिलें छोड़ गया था, वे भी गायब थीं।

मैंने तत्काल इस चोरी की रपट लिखवा दी। अगले सप्ताह उधर से फोन आया कि चोर पकड़ लिये गये हैं। यह भी पूछा गया कि क्या मैं उनके खिलाफ दर्ज शिकायत पर हस्ताक्षर करने के लिए वहाँ पहुँच सकती हूँ?

''निश्चय ही आऊँगी।'' मैंने गुस्से में कहा, ''क्या साइकिलें आपको मिल गयीं?''

''हाँ, एक साइकिल तो यहाँ मौजूद है, लेकिन दूसरी साइकिल किसी ने चोरों के यहाँ से ही उड़ा ली।''

मैंने वहाँ पहुँचते ही पूछा, ''कहाँ हैं चोर?''

''उधर हॉल में बैठे हुए हैं।'' उत्तर मिला।

वहाँ दो दुबले-पतले लड़के बैठे थे। उनके बाल बिखरे थे और निगाहें भी सहमी-सहमी सी थीं।

''पूरा भरोसा है आपको कि इन्हीं लोगों ने...?'' बाद में मैंने पूछा।

''निस्संदेह, यही लोग दोषी हैं। सब कुछ ये स्वीकार भी कर चुके हैं।''

तभी जज साहिबा ने प्रवेश किया और पुलिस उन लड़कों को लाने चली गयी। लड़के डरे-सहमे से कमरे में आये।

''जज साहिबा, क्यों न ये लड़के इस वसंत के दौरान मेरा काम कर दिया करें?'' मैंने पूछा,''इस प्रकार ये गायब साइकिल की क्षतिपूर्ति करने लायक कमा भी लेंगे। मेरी तो मदद हो जाएगी और ये लड़के पैसों की कीमत समझने लगेंगे।'' मैंने तर्क रखा।

जज साहिबा बोलीं,''ठीक है लेकिन आप यह भी समझ रही हैं न कि आप अपने लिए कैसी परेशानी मोल लेने जा रही हैं? फिर भी, ठीक है।'' अगले शनिवार, सुबह ठीक सात बजे दस्तक सुनकर मेरी नींद खुली। ठंड में काँपते हुए दोनों लड़के ड्योढ़ी पर खड़े थे।

''अंदर आ जाओ,'' मैंने उनसे कहा,''काम शुरू करने से पहले नाश्ता कर लें तो कैसा रहे?''

कुछ देर बाद हम नाश्ता करने बैठे। लड़कों ने वह सब देखते ही काँटे उठा लिये।

''इतनी हड़बड़ी क्या है? चलो, पहले प्रार्थना कर लें।''

जितनी देर मैं प्रार्थना करती रही, दोनों लड़के पलकें झुकाये चोरी-चोरी एक-दूसरे को ताकते रहे। खाते समय उन्होंने मुझे बताया कि उनमें से एक की उम्र दस बरस है और दूसरे की ग्यारह, लेकिन दोनों स्कूल की एक ही कक्षा में थे। ग्यारह बरस वाले ने पिछले वर्ष अपने माता-पिता के

तलाक के बाद से तीन-तीन बार स्थान परिवर्तन किया था। दूसरे की माँ अपने पति की मृत्यु के बाद महीनों अवसादग्रस्त रह चुकी थी।

दोपहर होने तक हम बाग में काम करते रहे। फिर हम लोगों ने रेस्तरां में जाकर खाना खाया। अगले सोमवार से उनका वसंत का अवकाश शुरू हो रहा था, सो उस दिन से मैंने उन्हें नौ बजे आने को कह दिया। अगली सुबह, फिर सात बजे दरवाजे पर दस्तक पड़ी।

...नहीं, नहीं, उन लड़कों के अलावा कोई दूसरा नहीं हो सकता। उन्हें मैंने रामायण के पात्रों के नाम पर लव और कुश कहना शुरू कर दिया था।

''हम लोग आपके लिए एक उपहार लाये हैं।'' लव ने कहा और कुश ने एक छोटा-सा धारीदार साँप मुझे थमा दिया। मैंने दाँत भींच लिये और साँप कुश को लौटा दिया।

''बहुत-बहुत धन्यवाद। बच्चो! अब इसे बाग में ले जाकर छोड़ दो।''

लड़कों ने एक-दूसरे की ओर देखा, मानो कह रहे हों...कैसी औरत है? साँप देने पर भी धन्यवाद दे रही है। सोमवार आते देर नहीं लगी। मुझे उन लड़कों को सब्जियों की पौध और खर-पतवार का फर्क बताना पड़ा।

उन्होंने कई प्रश्न पूछे और हमने पर्यावरण, वन्य जीवन और फिर संगीत मंडलियों के बारे में घंटा भर बातें कीं। अगली सुबह फिर वही दस्तक...। कुश ने कहा, ''आज तो हम आपके लिए सचमुच बहुत सुंदर उपहार लाये हैं।'' इसके साथ ही मुझे एक बड़ा-सा काला साँप पकड़ा दिया गया। बात अब कुछ ज्यादा ही बढ़ गयी है, मैंने सोचा।

''देखो लड़को, यह जहरीला नहीं है।'' कहते हुए मैंने साँप को उनकी तरफ उछाल दिया। वे उसे छोड़-छाड़ कर भाग खड़े हुए। अंतत: वे लौटे तो मैंने कहा,''मैंने नौ बच्चे पाले-पोसे हैं और दुनिया में ऐसी कोई हुड़दंग नहीं जिससे मेरा

पाला न पड़ा हो। तुम लोग मेरे लिए साँप लाने से बढ़कर कोई और शरारत नहीं कर सकते तो आइंदा मुझे डराने की कोशिश कभी मत करना।''

लड़कों की आँखों में मेरे लिए आदर का भाव तिर आया था। लड़कों ने फावड़े चलाये, पानी पटाया, निराई आदि भी की। गरमी भर हम लोगों ने मिल-जुल कर सारा काम किया। पुरस्कारस्वरूप मैं उन्हें भ्रमण यात्राओं और पिकनिक पर भी ले जाने लगी। पतझड़ के प्रारंभ में हमने ट्यूलिप, डैफोडिल आदि लगाये।

लड़कों के पूछने पर मैंने कहा,''कल यही फूलों की तरह खिल जाएंगे तो इस वसंत में मैं अपनी यही पूँजी लगाऊँगी।'' सारी गरमियां मैं वही सारे व्यंजन बनाती रही जिन्हें बनाये न जाने कितने बरस गुजर चुके थे। हमने मिलकर सोंठ वाली रोटियां भी बनायीं।

इस बीच लड़कों ने इतना कमा लिया था कि उनका कर्ज भी पट गया और यहाँ तक कि वे खुद अपने लिए भी साइकिल खरीद लाये। वे स्कूल तो जाने लगे, लेकिन शनिवार और छुट्टियों के दिन मेरी सहायता के लिए अवश्य आ जाते।

अगले वसंत में दस दिन अस्पताल में रहने के बाद मैं घर लौटी तो लव और कुश शहर से अपनी साइकिलें चलाते मुझसे मिलने आये...उसी तरह सुबह-सुबह सात बजे। उन्होंने मुझे गुलदस्ता भेंट किया, ट्यूलिप के उन्हीं फूलों का गुलदस्ता, जो हमने कभी मिल-जुल कर लगाये थे।

हम रसोई में गये तो मैंने बिस्कुट और दूध के साथ उन्हें रसभरी का जैम खाने को दिया। यह जैम भी हम लोगों ने ही मिलकर बनाया था। ज्यों ही मैं एक बिस्कुट उठाकर मुँह में रखने लगी, दोनों लड़के एक साथ बोल पड़े, ''अरे, इतनी हड़बड़ी क्या है? चलें, पहले हम प्रार्थना तो कर लें।''

मैंने अकचका कर उन दोनों की ओर देखा। वे मुझे स्नेह से निहार रहे थे। वसंत में मैंने जो पौध लगायी थी, वह पल्लवित हो उठी थी।

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के पावन जन्म की 111 वर्षीय परिसम्पन्नता तथा उनकी मुनि दीक्षा के 100 वर्ष पूर्ण होने के साथ ही अणुव्रत पत्रिका के प्रकाशन के 71वें वर्ष में प्रवेश पर प्रकाशित 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' (अक्टूबर-नवम्बर 2025) के संदर्भ में हमें निरंतर संवाद और सम्मतियाँ प्राप्त हो रही हैं। 'पाठक परख' के अंतर्गत आप प्रबुद्ध पाठकों के मूल्यवान विचारों से परिचित हो सकेंगे।

'अणुव्रत का विश्वकोश' है विशेषांक

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के यशस्वी अध्यक्ष श्री प्रताप सिंह दुगड़ के नेतृत्व में श्री संचय जी जैन द्वारा संपादित 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' प्राप्त हुआ। अणुव्रत आन्दोलन की पृष्ठभूमि, अणुव्रत का इतिहास, इसकी स्वीकार्यता, समसामयिक उपादेयता और बेहतर भविष्य निर्माण की परिकल्पना परोसता यह विशेषांक 'अणुव्रत का विश्वकोश' प्रतीत हो रहा है। कवर पेज से लेकर पूरा कलेवर अणुव्रत के यशोगान को अनुगुंजित कर रहा है। इसमें उच्च चिंतन है, स्वाधीनता का भाव है, अणुव्रत का सार है।

ऐसे कालजयी विशेषांक को संपादित करने के लिए साहित्य महर्षि संचय भैया, विशेषांक के सशक्त संयोजक श्री अविनाश जी नाहर व पूरी संपादकीय टीम को हृदय के अन्त:स्थल से असीम बधाइयां।

– **डॉ. कुसुम लुनिया**, उपाध्यक्ष, अणुविभा

ऐतिहासिक धरोहर है यह विशेषांक

'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' के गहन अवलोकन का सुअवसर मिला। यह विशेषांक एक ऐतिहासिक धरोहर बन गया है। यह मानवीय संस्कारों, संवेदनशील उद्‌गारों, संदेशों एवं विविध बहुमूल्य विचारों से ओतप्रोत है। निश्चित रूप से यह एक ऐसा दस्तावेज है जो आचार्य तुलसी एवं प्रबुद्ध मनीषियों के वसुधैव कुटुम्बकम् के आशीर्वचनों से विश्व शांति का संदेश देने में सक्षम है।

– **डॉ. रमेश गुप्त मिलन**, पुणे

मानवीय मूल्यों से अनुप्राणित

'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' का हर आलेख मानव मन की गाँठें खोलकर, उसकी आत्मचेतना को जाग्रत करते हुए, उसकी आध्यात्मिक उन्नति का प्रयास करता प्रतीत हो रहा है। 'अणुव्रत' पत्रिका के गौरवशाली 70वें वर्ष में आदरणीय संचय जैनजी के संपादकत्व में प्रकाशित 488 पृष्ठों का 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' मानवीय मूल्यों से अनुप्राणित, सारगर्भित संग्रहणीय विशेषांक है।

– **सुधा आदेश**, बेंगलुरु

अणुव्रत दर्शन पर व्यापक सामग्री

'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक' अणुव्रत दर्शन पर व्यापक सामग्री समेटे हुए है। इसमें अणुव्रत क्या हैं, इनको दैनिक जीवन में समाहित कर, आज के इस आपाधापी के युग में भी मानव कैसे अपने जीवन को सुखमय और शांतिमय बना सकता है, इसे विभिन्न आलेखों के माध्यम से बताया गया है। हर आलेख में जीवन को शांति के साथ जीने की प्रेरणादायक सामग्री समाहित है। कुल मिलाकर विशेषांक लाजवाब है। पूरे संपादक मंडल को जितना साधुवाद दें, उतना ही कम होगा। 'अणुव्रत' पत्रिका की यह यात्रा अनवरत चलती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

– **पारस चन्द जैन**, देवली

मौसम और मिजाज : बदलते रंग-रूप

परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

विवेक के साथ हो परिवर्तन

मार्च का आना केवल तारीख बदलना नहीं है, बल्कि शीत ऋतु की सुस्ती छोड़कर वसंत की नयी ऊर्जा को अपनाने का संकेत है। इस समय केवल मौसम नहीं बदलता, बल्कि हमारे मन और सोच को भी नयी दिशा देता है। जैसे प्रकृति इस मौसम में नयी कोंपलों और फूलों से स्वयं को सजाती है, वैसे ही हमें भी विवेक के साथ अपने भीतर झाँककर क्रोध, आवेग और अव्यवस्थित दिनचर्या को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। – **डॉ. कैलाश चन्द सैनी**, जयपुर

मौसम से सीखें मिजाज का संतुलन

शीत और ग्रीष्म ऋतु के बीच का परिवर्तन केवल मौसम तक सीमित नहीं रहता। हमारे भीतर भी भावनाओं और मिजाज के अनेक 'मौसम' समय-समय पर बदलते रहते हैं। प्रकृति हमें यह संदेश देती है कि हर अवस्था को स्वीकारते हुए उनके बीच संतुलन बनाकर आगे बढ़ते रहना ही जीवन की सार्थकता है, क्योंकि किसी एक अवस्था में अटके रहना न तो संभव है और न ही आवश्यक। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम अपने मिजाजों के अधीन न हों, बल्कि उन्हें समझकर अपने हित में साध सकें। – **मीनू जैन**, जयगांव

मन चंगा तो कठौती में गंगा

आज ऋतु कोई-सी भी हो, उसका अंदाज बदला-बदला-सा नजर आता है। मानवीय प्रकृति में भी आज कितना बदलाव आ गया है। जीवन मूल्य कहते हैं कि हर मौसम समाज की सेहत और प्रगति का कारक हो सकता है, बशर्ते हम उसकी तासीर का, उसके प्रभाव का सकारात्मक उपयोग कर सकें। सही कहा है, मन चंगा तो कठौती में गंगा। – **भगवती प्रसाद गौतम**, कोटा

आगामी परिचर्चा का विषय

कितना मजबूत है चौथा स्तम्भ?

☐ मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है।

☐ भारत में प्रेस की स्वतंत्रता को संविधान प्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अंग माना गया है।

☐ भारतीय लोकतंत्र की मजबूती में वर्तमान मीडिया की आप क्या भूमिका देखते हैं?

☐ प्रेस फ्रीडम इंडेक्स में क्यों लगातार पिछड़ता जा रहा है भारत?

☐ भारत में प्रेस और मीडिया की इस स्थिति के लिए क्या कारण हैं जिम्मेदार और क्या है समाधान?

3 मई को 'वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम डे' पर अणुव्रत पत्रिका के मई 2026 अंक की परिचर्चा के लिए अपने सारगर्भित व अनुभवजन्य विचार हमें अधिकतम 200 शब्दों में 10 अप्रैल 2026 तक निम्न व्हाट्सएप नंबर के माध्यम से लिख भेजिए।

9116634512

अणुव्रत समाचार

जैन विश्व भारती परिसर, लाडनूं में

अणुव्रत भवन का लोकार्पण

लाडनूं। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में जैन विश्व भारती परिसर, लाडनूं में नवनिर्मित 'अणुव्रत भवन' का लोकार्पण अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में 19 फरवरी को किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत गीत के संगान के साथ अपने प्रेरक उद्बोधन में आचार्यश्री ने फरमाया,''आज फाल्गुन शुक्ल द्वितीया, परमपूज्य कालूगणी का जन्म दिवस और अणुव्रत आन्दोलन का भी मानो जन्म दिवस है। परमपूज्य आचार्य तुलसी के आचार्यकाल का एक महत्वपूर्ण लोक-कल्याणकारी अवदान है अणुव्रत। यह व्यापक है, फैला हुआ है जो अब जैन विश्व भारती में थोड़ा केन्द्रित होने की स्थिति में आ रहा है। अणुव्रत की गतिविधियां आगे बढ़ें। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी जो एक प्रमुख संस्था है अणुव्रत के लिए, अणुव्रत की गतिविधियों को आगे बढ़ाने का प्रयास करती रहे।''

अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार ने अपने प्रेरक उद्बोधन में अणुव्रत परिवार का आह्वान करते हुए अणुव्रत, जीवन विज्ञान एवं अणुव्रत के सभी प्रकल्पों को सुचारु रूप से गति प्रदान करने की प्रेरणा दी।

अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने कहा कि इस नवनिर्मित अणुव्रत भवन में पूज्यप्रवर के पावन पदार्पण से पूरा अणुव्रत परिवार स्वयं को न केवल गौरवान्वित महसूस कर रहा है अपितु सौभाग्यशाली भी अनुभव कर रहा है। उन्होंने अणुव्रत भवन के निर्माण की परिकल्पना, अनुदान एवं आंतरिक साज-सज्जा आदि के लिए किये गये श्रमनिष्ठ कार्यों हेतु अणुविभा के निवर्तमान अध्यक्ष अविनाश नाहर के प्रति आभार प्रकट किया। इस कार्य में निवर्तमान महामंत्री भीखम सुराणा का भी समय-सापेक्ष सहयोग प्राप्त हुआ, उनके प्रति अध्यक्ष महोदय ने मुक्तकंठ से आभार प्रकट किया।

भवन के उद्घाटनकर्ता श्रीमती शायर-हीरालाल मालू, बेंगलुरु-सुजानगढ़, विशिष्ट सहयोगी श्रीमती सुशीला-कन्हैयालाल 'जैन' पटावरी, दिल्ली-मोमासर, श्रीमती सुमनश्री-सुमतिचंद गोठी, मुम्बई-सरदारशहर, श्रीमती सुशीला-उमेद बोकड़िया, चेन्नई-लाडनूं, श्री राजकरण सुनील दफ्तरी, किशनगंज-सरदारशहर, श्री दौलत कैलाश डागा, जयपुर-श्रीडूंगरगढ़, श्री रतन विजयराज दुगड़, कोलकाता-सरदारशहर, रसरसना-रसमधुर परिवार, बीकानेर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए सहयोग की निरन्तरता बनाये रखने का आह्वान किया।

अणुव्रत भवन हेतु अनुदानदाता हीरालाल मालू, उमेद बोकड़िया, रतन दुगड़, अणुविभा न्यासी राकेश कठौतिया, आचार्य श्री महाश्रमण योगक्षेम वर्ष प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष प्रमोद बैद आदि ने विचार व्यक्त किये, अनुदान का अवसर दिये जाने के लिए अणुविभा परिवार के प्रति आभार प्रकट किया। सभी को स्मृति-चिह्न प्रदान कर एवं अणुव्रत दुपट्टा पहना कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का सफल संयोजन करते हुए अणुविभा के निवर्तमान अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत के सभी प्रकल्पों के लिए निरन्तर कार्य करने एवं कार्यकर्ताओं के समर्पण के प्रति साधुवाद प्रकट किया। लाडनूं अणुव्रत भवन के निर्माण के संदर्भ में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़, मंत्री सलिल लोढ़ा एवं परिसर संयोजक धरमचन्द लूंकड़ के प्रति भी शुभभावनाएं प्रकट कीं। जैन विश्व भारती, आचार्य श्री महाश्रमण योगक्षेम वर्ष प्रवास व्यवस्था समिति, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महिला मण्डल, लाडनूं, तेरापंथ युवक परिषद्, लाडनूं के प्रति शुभभावनाएं प्रकट कीं। इस कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु अणुव्रत समिति, लाडनूं के पदाधिकारी एवं सदस्यों का श्रमसाध्य योगदान प्राप्त हुआ। आभार ज्ञापन महामंत्री मनोज सिंघवी ने किया। इस अवसर पर अणुविभा उपाध्यक्ष कुसुम लुनिया, कैलाश बोराणा, कोषाध्यक्ष राकेश बरड़िया, सहमंत्री सुरेन्द्र नाहटा, उमेंद्र गोयल, संगठन मंत्री भरत चौरड़िया, राजेश चावत, पायल चौरड़िया, अंतरराष्ट्रीय संगठन मंत्री दीपक डागलिया एवं प्रकल्प संयोजक विनोद बच्छावत, जिनेंद्र कोठारी, सुधा भंसाली, नीलम जैन, रचना कोठारी एवं देश के विभिन्न क्षेत्रों से अणुव्रत समितियों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अणुव्रत भवन के लोकार्पण के अवसर पर
अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन
उद्‌गार सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें...

अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता परिणाम घोषित

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से आयोजित अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता 2025-26 के अंतिम चरण का परिणाम घोषित कर दिया गया। 27 फरवरी को हुई ऑनलाइन परीक्षा में 384 प्रतियोगी शामिल हुए थे। कांकरोली के राजेश लोढा 100 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रहे। 97 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले 9 प्रतियोगियों को दूसरा स्थान मिला। इनमें राजलदेसर की हेमलता घोसल, कालू की जागृति भादानी, नेहा भादानी व खुशहाल भादानी, नोएडा की कंचन सेठिया, नोखा की लीलादेवी मरोठी, साउथ हावड़ा की ममता जैन, अहमदाबाद की नेहा कोठारी और हुबली की संतोष वेदमुथा शामिल हैं। अमृतसर की समता जैन ने 95 प्रतिशत अंक प्राप्त कर तीसरा स्थान प्राप्त किया।

राजेश लोढा

हिन्दी व अँग्रेजी की प्रसिद्ध द्विभाषी बाल पत्रिका
60 पृष्ठ... रंगीन चित्रों के साथ..

अणुविभा का
मासिक प्रकाशन

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक

श्रेष्ठ बाल साहित्य रचनाकारों द्वारा सृजित कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, पहेलियाँ व ढेरों जानकारियाँ।
नियमित पत्रिका मँगवाने के लिए देखें पृष्ठ 36

नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

योगक्षेम अणुव्रत संगठन यात्रा

राष्ट्रीय संयोजक विनोद कोठारी की रिपोर्ट

योगक्षेम अणुव्रत संगठन यात्रा की सफलता में अणुविभा के पदाधिकारियों, राज्य प्रभारियों व समितियों की महत्वपूर्ण सहभागिता निरंतर योगभूत बन रही है। 16 जनवरी से प्रारंभ हुई यात्रा के द्वितीय चरण में एक बार पुनः सभी साथियों की मेहनत रंग लाती दृष्टिगत हो रही है। प्रस्तुत है योगक्षेम संगठन यात्रा के द्वितीय चरण की संक्षिप्त रिपोर्ट –

बिहार

यात्रा दल : संगठन मन्त्री भरत चौरड़िया
राज्य प्रभारी (बिहार) सन्तोष देवी दुगड़, विशेष आमन्त्रित सदस्य कमल बोहरा और प्रभा सेठिया।

किशनगंज-अररिया-फारबिसगंज : बिहार स्तरीय योगक्षेम अणुव्रत संगठन यात्रा अणुविभा के संगठन मंत्री भरत चौरड़िया की अध्यक्षता में 21 जनवरी को आयोजित की गयी। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति किशनगंज की अध्यक्ष रश्मि बैद, अणुव्रत परिवार तथा श्रावक-श्राविकाओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।

अणुव्रत समिति **फारबिसगंज** द्वारा आयोजित संगोष्ठी में अणुविभा के केन्द्रीय पदाधिकारियों, अणुव्रत समिति के सदस्यों व गणमान्यजनों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

अररिया अणुव्रत समिति द्वारा 21 जनवरी को आयोजित

किशनगंज

कार्यक्रम में भरत चौरड़िया ने अणुव्रत के प्रकल्पों की जानकारी दी और जिज्ञासाओं का समाधान किया।

राजस्थान (बीकानेर संभाग)

यात्रा दल : अणुविभा उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया, पर्यावरण प्रकल्प संयोजिका डॉ. नीलम जैन, अणुव्रत पत्रिका सदस्यता प्रसार संयोजक विनोद बच्छावत, बीकानेर संभाग राज्य प्रभारी अशोक चौरड़िया व अणुव्रत परिवार की संयोजिका रचना कोठारी।

गंगाशहर : अणुव्रत समिति गंगाशहर द्वारा योगक्षेम संगठन यात्रा के संदर्भ में प्रथम कार्यक्रम उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनिश्री कमलकुमार के सान्निध्य में हुआ जिसमें मुनिश्री ने अणुव्रत को इंसान को इंसान बनाने का उपक्रम बताया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए अणुविभा उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया ने समिति को योगक्षेम वर्ष में अधिकाधिक सहभागिता की प्रेरणा दी। स्वागत वक्तव्य अध्यक्ष करणीदान रांका ने दिया।

बीकानेर : शासनश्री साध्वीश्री मंजुप्रभा एवं शासनश्री साध्वीश्री कुंथुश्री के सान्निध्य में दुगड़ भवन में बीकानेर अणुव्रत समिति द्वारा संगठन यात्रा के अंतर्गत कार्यक्रम आयोजित हुआ। स्वागत वक्तव्य अध्यक्ष भंवरलाल गोलछा ने दिया।

राजलदेसर : राजलदेसर में कार्यक्रम का आयोजन शासनश्री साध्वीश्री मानकुमारी के सान्निध्य में हुआ। डॉ. कुसुम लुनिया ने अणुविभा के प्रकल्पों की जानकारी दी।

बीकानेर

राजस्थान (उदयपुर-भीलवाड़ा संभाग)

यात्रा दल : अणुविभा उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया, सहमंत्री जगजीवन चौरड़िया, राज्य प्रभारी (उदयपुर-भीलवाड़ा संभाग) अभिषेक कोठारी, व बालोदय संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया।

भीलवाड़ा एवं पुर : योगक्षेम अणुव्रत संगठन यात्रा का आयोजन तेरापंथ सभा भवनमें किया गया। भीलवाड़ा अणुव्रत समिति अध्यक्ष अभिषेक कोठारी ने कहा कि समिति की सफलता का श्रेय उसके कर्मठ पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों को जाता है। मंत्री पूनम कर्णावट ने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। पुर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष नंद बैरवा ने समिति के कार्यों से अवगत करवाया।

आसींद : तेरापंथ भवन में विराजित साध्वीश्री जसवती से मार्गदर्शन व आशीर्वाद प्राप्त कर आसींद में संगठन यात्रा के अंतर्गत कार्यक्रम का आयोजन हुआ। समिति अध्यक्ष पारस ओस्तवाल ने सभी का स्वागत किया। राज्य प्रभारी अभिषेक कोठारी व बालोदय संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया ने बताया कि आसींद क्षेत्र से विभिन्न विद्यालय बालोदय शिविरों में भाग लेते हैं, यह विशेष बात है। बैठक के पश्चात् अमृत भारती विद्यालय के उद्यान को अणुव्रत वाटिका का रूप दिया गया जिसका उद्घाटन उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया ने किया।

दौलतगढ़ : योगक्षेम संगठन यात्रा के दौरान दौलतगढ़ में अणुव्रत मंच का नवगठन किया गया एवं संयोजक के रूप

भीलवाड़ा

में हिमांशु रांका की नियुक्ति की गयी। उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया, राज्य प्रभारी अभिषेक कोठारी एवं बालोदय संयोजिका ने विभिन्न प्रकल्पों के बारे में बताया।

गंगापुर : अणुव्रत मंच गंगापुर द्वारा कालू कल्याण कुंज में आयोजित कार्यक्रम में सभा के मंत्री रमेश हिरण ने सभी का स्वागत किया। केन्द्रीय पदाधिकारियों ने अष्टमाचार्य कालूगणी समाधि स्थल के दर्शन किये।

पश्चिम बंगाल

यात्रा दल : प्रचार-प्रसार मंत्री पंकज दुधोड़िया।

हावड़ा : मुनिश्री जिनेशकुमार के सान्निध्य में बंगाल संभाग स्तरीय योगक्षेम अणुव्रत संगठन यात्रा के अंतर्गत अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता अणुविभा के प्रचार-प्रसार मंत्री पंकज दुधोड़िया ने की। समिति अध्यक्ष दीपक नखत ने स्वागत वक्तव्य दिया।

मध्यप्रदेश

यात्रा दल : संगठन मंत्री साधना कोठारी, संयोजक अणुवत क्षेत्रोत्थान समिति सुरेश कोठारी, राज्य प्रभारी पवन भंडारी व कार्यसमिति सदस्य निलेश पोखरना।

बोरी अलिराजपुर : बोरी अलिराजपुर में अणुविभा की संगठन मंत्री साधना कोठारी व अणुव्रत क्षेत्रोत्थान समिति झाबुआ क्षेत्र के संयोजक सुरेश कोठारी के नेतृत्व में कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति बोरी के अध्यक्ष लालचन्द गाँधी, मंत्री नवीन श्रीवास आदि उपस्थित रहे।

बोरी अलिराजपुर

दक्षिण गुजरात

यात्रा दल : उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, संगठन मंत्री (पश्चिमांचल) पायल चौरड़िया, सह मीडिया प्रभारी महावीर बड़ाला, राज्यप्रभारी (मराठवाड़ा) रोशन मेहता, राज्यप्रभारी (महाराष्ट्र विदर्भ) भूपेन्द्र वागरेचा, अणुव्रत परीक्षा राष्ट्रीय प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल तथा साम्प्रदायिक सौहार्द राष्ट्रीय सहसंयोजक राजेश चौरड़िया।

बड़ोदरा : 15 फरवरी को योगक्षेम संगठन यात्रा बड़ोदरा पहुँची। समिति अध्यक्ष प्रभा महनोत ने सभी का स्वागत किया। अणुव्रत परीक्षा राष्ट्रीय प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल तथा साम्प्रदायिक सौहार्द राष्ट्रीय सहसंयोजक राजेश चौरड़िया ने अणुव्रत प्रकल्पों की जानकारी दी।

संभाजीनगर : योगक्षेम अणुव्रत संगठन यात्रा के अंतर्गत अणुव्रत समिति संभाजीनगर द्वारा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विनोद कोठारी की अध्यक्षता में संगोष्ठी आयोजित हुई। समिति अध्यक्ष रूपा धोका ने स्वागत वक्तव्य दिया।

महाराष्ट्र (खानदेश)

यात्रा दल : संगठन मंत्री (पश्चिमांचल) पायल चौरड़िया एवं खानदेश प्रभारी पुष्पा कटारिया।

दोंडाईचा : अणुविभा संगठन मंत्री (पश्चिमांचल) पायल चौरड़िया एवं खानदेश प्रभारी पुष्पा कटारिया योगक्षेम अणुव्रत संगठन यात्रा के अन्तर्गत दोंडाईचा पहुँचीं। अणुव्रत समिति शाहदा के अध्यक्ष पद पर उत्तमचंद गैलड़ा का सर्वसम्मति से चयन किया गया।

दोंडाईचा

साक्री

योगक्षेम संगठन यात्रा के साक्री पहुँचने पर आयोजित बैठक में अणुव्रत समिति साक्री की प्रलंबित चुनाव प्रक्रिया भी सम्पन्न हुई। अध्यक्ष पद के लिए महावीर कांकरिया व मंत्री पद के लिए दिलीप कांकरिया का सर्वसम्मति से चयन हुआ।

महाराष्ट्र

यात्रा दल : महाराष्ट्र राज्य प्रभारी रोशन मेहता, मीडिया सहसंयोजक महावीर बड़ाला व एसीसी प्रभारी कंचन सोनी।

बोईसर

अणुव्रत समिति बोईसर की बैठक में एसीसी प्रभारी कंचन सोनी ने 'अणुव्रत' और 'बच्चों का देश' पत्रिका की सदस्यता बढ़ाने पर जोर दिया। बोईसर समिति अध्यक्ष भाग्यवती बाफना ने स्वागत किया।

पालघर

संगठन यात्रा पालघर पहुँची जहाँ अणुव्रत समिति अध्यक्ष हितेश सिंघवी ने स्वागत किया। मंत्री जयेश राठौड़ ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उपाध्यक्ष प्रदीप सिंघवी ने आय-व्यय का ब्यौरा दिया।

पालघर

अणुव्रत ही नैतिक भविष्य की आधारशिला

प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी

अणुव्रत लेखक मंच द्वारा 17 फरवरी को आयोजित ऑनलाइन संगोष्ठी में मुख्य वक्ता अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित व्यक्तित्व डॉ. प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि अणुव्रत केवल धार्मिक अनुशासन नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों पर आधारित जीवन पद्धति है, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र तीनों के निर्माण का सशक्त आधार बन सकती है। आज के नैतिक संकट के दौर में अणुव्रत की संकल्पना और भी प्रासंगिक हो उठी है।

इससे पहले अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने सभी का स्वागत किया। अणुव्रत लेखक मंच के राष्ट्रीय संयोजक जिनेन्द्र कुमार कोठारी ने मंच की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में देशभर से साहित्यकार, चिंतक एवं अणुव्रत कार्यकर्ता शामिल हुए।

31 जनवरी को अणुव्रत लेखक मंच द्वारा ऑनलाइन साहित्यिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने अध्यक्षीय उद्बोधन में साहित्यकारों से अणुव्रत दर्शन एवं विचार को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया। अणुव्रत लेखक मंच के राष्ट्रीय संयोजक जिनेन्द्र कुमार कोठारी ने विषय प्रवेश एवं संगोष्ठी की महत्ता को उजागर किया। वक्ताओं ने गणतंत्र को केवल शासन व्यवस्था नहीं, बल्कि अनुशासन, समानता और नैतिक आचरण का जीवन-दर्शन बताया। संगोष्ठी में 9 राज्यों के साहित्यकारों ने सहभागिता निभायी। उपसंहार वक्तव्य में अणुविभा की प्रभारी उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया ने सभी साहित्यकारों को योगक्षेम वर्ष में लाडनूं आने का आमंत्रण दिया।

पर्यावरण जागरूकता अभियान

अणुव्रत वाटिकाएं समाज के लिए बनें प्रेरणा-स्थल

संयोजिका डॉ. नीलम जैन की रिपोर्ट

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में पर्यावरण जागरूकता अभियान के अंतर्गत अणुव्रत वाटिकाओं के संरक्षण, संवर्धन एवं नियमित रख-रखाव विषय पर 11-12 फरवरी को ऑनलाइन बैठक का आयोजन किया गया। अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में स्पष्ट किया कि अणुव्रत वाटिकाएं पूर्णतः सुरक्षित, सुसज्जित एवं सक्रिय रहें, उनमें नियमित कार्यक्रम हों और वे समाज के लिए प्रेरणा-स्थल बनें। अणुविभा महामंत्री मनोज सिंघवी ने विषय की भूमिका प्रस्तुत करते हुए कहा कि वाटिका से आत्मीयता के साथ जुड़ें।

पर्यावरण जागरूकता अभियान की राष्ट्रीय संयोजिका डॉ. नीलम जैन ने कहा कि जब कोई व्यक्ति नियमित रूप से वाटिका की देखभाल करता है, तो वह केवल पौधों को नहीं सींचता, बल्कि अपने भीतर अनुशासन, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी के संस्कारों को विकसित करता है।

अभियान के सह-संयोजक राजन जैन (मध्यांचल), इंदरचंद सेठिया (उत्तरांचल), प्रभा सेठिया (पूर्वांचल), मुकेश डूंगरवाल (दक्षिणांचल), कमलेश गादिया (पश्चिमांचल) ने वाटिका प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया, जिन्होंने अपने अनुभव, वहाँ आयोजित कार्यक्रमों एवं भविष्य की योजनाओं को साझा किया। अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने सभी की जिज्ञासाओं का समाधान किया। अणुविभा उपाध्यक्ष एवं पर्यावरण प्रभारी विनोद कोठारी ने कहा कि समय-समय पर वाटिका की साज-सज्जा एवं रचनात्मक रूपांतरण किया जाये। वाटिका इतनी सुसज्जित एवं आकर्षक हो कि लोग स्वयं कहें...''हमें अणुव्रत वाटिका देखने जाना है।'' दो दिवसीय इस विचार-मंथन में 90 से अधिक सदस्यों की सहभागिता रही।

अणुव्रत क्राइस्ट मैसूर मैराथन का आयोजन

मैसूर। अणुव्रत समिति मैसूर एवं क्राइस्ट कॉलेज की ओर से अणुव्रत क्राइस्ट मैसूर मैराथन का सफल आयोजन किया गया। नशामुक्त समाज के उद्देश्य से आयोजित 10.5 किमी लंबी मैराथन में बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। मुख्य अतिथि डिप्टी डायरेक्टर चन्नबसवन्ना एवं डिप्टी सुपरिटेंडेंट ऑफ पुलिस नागेश ने युवाओं से नशे से दूर रहकर स्वस्थ एवं अनुशासित जीवन अपनाने का संदेश दिया।

अणुव्रत विश्व भारती

की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका

ई-संस्करण

नि:शुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिये गये व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश हमें भेज सकते हैं।

ई-पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।

आचार्य श्री तुलसी

अणुव्रत आचार संहिता

1

मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा।
•मैं आत्म-हत्या नहीं करूँगा।
•मैं भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।

2

मैं आक्रमण नहीं करूँगा।
•आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। •विश्व-शांति तथा नि:शस्त्रीकरण के लिए प्रयास करूँगा।

3

मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।

4

मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। •जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा।
•अस्पृश्य नहीं मानूँगा।

5

मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा।
•साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।

6

मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा।
•अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। •छलपूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।

7

मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।

8

मैं चुनाव के संदर्भ में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।

9

मैं सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।

10

मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊँगा। •मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।

11

मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।
•हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा।
•पानी-बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए सामने दिये गये चित्र पर क्लिक करें..

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के गौरवशाली प्रकाशन

'अणुव्रत'
पत्रिका

प्रकाशन के **70** वर्ष

विशेष छूट योजना

'बच्चों का देश'
पत्रिका

प्रकाशन के **25** वर्ष

सदस्यता अभिवृद्धि के आकर्षक अभियान से जुड़िए

अवधि	अणुव्रत	बच्चों का देश
1 वर्ष	₹ 800	₹ 500
3 वर्ष	₹ 2200	₹ 1350
5 वर्ष	₹ 3500	₹ 2100
15 वर्ष (योगक्षेमी)	₹ 21000	₹ 15000

भुगतान के लिए QR कोड को स्कैन करें

ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
IDBI BANK Rajsamand Branch
A/c No.: 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

इस मुहिम में अणुव्रत समिति और अणुव्रत मंच के साथ-साथ रुचिशील कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत स्तर पर भी जुड़ सकते हैं।

विशेष सदस्यता अभियान की जानकारी के लिए सम्पर्क करें

- संयोजक : विनोद बच्छावत +91 88263 28328
- कार्यालय : +91 91166 34512, 94143 43100